Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 12 | DECEMBER 2024

अपभ्रंश और आधुनिक भारतीय भाषाएँ: एक अध्ययन

करताराम पहाडिया [1]

[1] **सहायक आचार्य, वी/पी-पूरन, तह-जसवंतपुरा जिला-जालौर (राजस्थान).**

ABSTRACT:

अपभ्रंश भाषाएँ प्राचीन भारतीय भाषाई इतिहास का एक महत्वपूर्ण चरण हैं, जो संस्कृत और प्राकृत के बाद विकसित हुईं। यह भाषाएँ आधुनिक भारतीय भाषाओं, जैसे हिंदी, गुजराती, मराठी, बंगाली आदि के विकास की आधारशिला हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य अपभ्रंश भाषाओं की विशेषताओं और उनके आधुनिक भारतीय भाषाओं पर पड़े प्रभाव का अध्ययन करना है।

KEYWORDS:

अपभ्रंश, आधुनिक भारतीय भाषाएँ, प्राकृत, भाषा विकास, भाषाई इतिहास, हिंदी, भाषाई संरचना ।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
25th December 2024	30th December 2024

विषय वस्तु

परिचय

भारत की सांस्कृतिक और भाषाई धरोहर अत्यधिक विविध और समृद्ध है। भारतीय भाषाओं का इतिहास हजारों वर्षों पुराना है, और इस लंबे समय के दौरान भाषा के विकास में कई महत्वपूर्ण चरण आए हैं। इन चरणों में अपभ्रंश एक केंद्रीय स्थान रखता है। अपभ्रंश का काल लगभग 6वीं शताब्दी से 13वीं शताब्दी के बीच माना जाता है। यह संस्कृत और प्राकृत के मध्य संक्रमण का काल था और आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की नींव रखी। यह वह समय था जब प्राचीन संस्कृत की जटिलता को सरल बनाने के प्रयास किए गए थे और आम जनता की बोलचाल की भाषाओं का विकास हुआ। अपभ्रंश शब्द का अर्थ "भ्रष्ट" या "बदला हुआ" है, जो प्राकृत भाषाओं के उत्थान के साथ जुड़ा हुआ है। इस काल में भाषाई संरचना और ध्वनियों में बड़े बदलाव हुए, और अपभ्रंश भाषाएँ जनसामान्य में प्रचलित हो गईं। इन भाषाओं ने संस्कृत के कठिन व्याकरण और शब्दावलियों को सरल बनाया, जिससे कि सामान्य लोग इन भाषाओं का प्रयोग आसानी से कर सकें। अपभ्रंश ने भारतीय समाज में संप्रेषण की सहजता और लोकतांत्रिक भाषा उपयोग को बढ़ावा दिया। यह भाषा-परिवर्तन न केवल भाषाई दृष्टिकोण से, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण था।

अपभ्रंश का अस्तित्व भारतीय भाषाओं के विकास में एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखा जाता है। यह भाषा न केवल संस्कृत और प्राकृत के बीच का एक सेतु था, बल्कि यह आधुनिक भारतीय भाषाओं की विकास-यात्रा की दिशा को भी निर्धारित करता था। इन भाषाओं के द्वारा जो शब्द, ध्वनियाँ और व्याकरणिक संरचनाएँ प्रस्तुत की गईं, वे बाद में हिंदी, गुजराती, मराठी, बंगाली, और अन्य भारतीय भाषाओं में समाहित हो गईं। अपभ्रंश का योगदान केवल भाषाई संरचनाओं तक ही सीमित नहीं था, बल्कि इसने भारतीय साहित्य, संस्कृति और धार्मिक साहित्य में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपभ्रंश में रचित साहित्य में धार्मिक विचारों, भक्ति, प्रेम, और समाज के विभिन्न पहलुओं का निरूपण किया गया। जैन और बौद्ध साहित्य में अपभ्रंश का विशेष स्थान था, जहाँ इसे धार्मिक विचारों को सरल और व्यापक रूप से प्रसारित करने के माध्यम के रूप में प्रयोग किया गया। इस साहित्य ने न केवल तत्कालीन सामाजिक संरचनाओं को चित्रित किया, बल्कि यह भारतीय साहित्य और समाज के विकास में भी अहम योगदान दिया। आधुनिक भारतीय भाषाओं पर अपभ्रंश का प्रभाव आज भी देखा जा सकता है। कई भारतीय भाषाओं में अपभ्रंश से आए शब्द, ध्वनियाँ, और व्याकरणिक परिवर्तन स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। अपभ्रंश के दौर ने भारतीय भाषाओं में व्याकरण और शब्दावली की संरचना को नया रूप दिया और उसे अधिक सरल, व्यावहारिक और जनप्रिय बनाया। इस प्रकार, अपभ्रंश ने भारतीय भाषाओं के विकास में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य किया और भारतीय संस्कृति और समाज में अपनी छाप छोड़ी।

अपभ्रंश का स्वरूप

अपभ्रंश, संस्कृत और प्राकृत के बीच का एक संक्रमणकालीन चरण था, जो भारतीय भाषाओं के विकास में अत्यधिक महत्वपूर्ण था। यह शब्द अपने आप में "भ्रष्ट" या "बदला हुआ" संस्कृत को दर्शाता है, जिसे प्राकृत से उत्पन्न एक प्रकार की भाषा के रूप में समझा जा सकता है। अपभ्रंश का रूप मुख्य रूप से प्राकृत भाषाओं के सरल और क्षेत्रीय भिन्नताओं के कारण उत्पन्न हुआ, जिनमें व्याकरण, उच्चारण और शब्दावली में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले। अपभ्रंश के रूप में भाषा की संरचना में स्पष्ट बदलाव हुआ, जो उसे संस्कृत और प्राकृत से अलग करता है।

ध्वनि और उच्चारण में परिवर्तन

अपभ्रंश में ध्वनि परिवर्तन और उच्चारण में सरलता आई। संस्कृत की कठिन और विशिष्ट ध्वनियाँ अपभ्रंश में सुलभ और सामान्य ध्वनियों में बदल गईं। उदाहरण के तौर पर, संस्कृत में "क्ष" ध्वनि का प्रयोग, जैसे "क्षेत्र" (kṣetra) को अपभ्रंश में "स" ध्वनि में बदला गया, जिससे यह "सेतर" (setar) बन गया। इसी प्रकार, "ष" को "स" में बदला गया, जैसे "षट्" (ṣaṭ) को "छट" (chaṭ) बना दिया गया।

शब्द संरचना

अपभ्रंश में संस्कृत शब्दों का रूप सादा और लचीला हो गया। संस्कृत शब्दों को संकुचित या सरल रूप में लिया गया, जिससे शब्दों की लंबाई और जटिलता कम हो गई। उदाहरण के लिए, संस्कृत में "राजन्" (rājan) का रूप अपभ्रंश में "राजा" (rājā) में बदल गया। इस प्रकार के बदलाव अपभ्रंश को जनसामान्य में अधिक उपयुक्त और बोली जाने योग्य बनाते थे।

इसके अलावा, संस्कृत में प्रकट होने वाले कठिन समास (compound words) भी अपभ्रंश में टूट गए और सरल रूप में सामने आए। जैसे "पृथ्वीराज" को अपभ्रंश में "पृथ्वी

राजा" या "पृथ्वी रा" के रूप में देखा जा सकता है।

व्याकरण में सरलीकरण

संस्कृत की तुलना में अपभ्रंश में व्याकरणिक संरचना अधिक सरल और लचीली थी। संस्कृत में संधि, समास और अन्य जटिल व्याकरणिक नियमों की अनिवार्यता थी, लेकिन अपभ्रंश में इनकी संख्या कम हो गई और उनमें से कुछ पूरी तरह समाप्त हो गए।

- **संधि का अभाव**: अपभ्रंश में संस्कृत जैसी जटिल संधियों का प्रचलन कम हुआ। उदाहरण के लिए, संस्कृत में "दृष्टिपथ" (dṛṣṭipatha) शब्द को अपभ्रंश में "देखनापथ" (dekhanāpath) के रूप में देखा जा सकता है।
- **वचन और लिंग का सरल रूप**: अपभ्रंश में लिंग और वचन का प्रयोग संस्कृत से सरल था। उदाहरण के तौर पर, संस्कृत में शब्दों के विभिन्न रूप होते थे, जबकि अपभ्रंश में शब्द का रूप अधिक समान था।
- **काल और धातु का प्रयोग**: अपभ्रंश में संस्कृत के मुकाबले काल और धातु का प्रयोग भी सरल हो गया।

शब्दावली का समावेश

अपभ्रंश में संस्कृत और प्राकृत शब्दों के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों के शब्द भी समाहित हुए। यह भाषा समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संपर्क का एक माध्यम बन गई थी। उदाहरण के लिए, अपभ्रंश में कुछ ऐसे शब्द आए, जो विशेष रूप से उन क्षेत्रों के थे जहां यह बोली जाती थी, और जो प्राचीन संस्कृत या प्राकृत से बिल्कुल अलग थे। इसके कारण अपभ्रंश ने जनसामान्य के बीच अपनी जगह बनाई और यह केवल शास्त्रज्ञों या ब्राह्मणों तक सीमित नहीं रहा।

साहित्यिक और काव्यात्मक स्वरूप

अपभ्रंश के साहित्य में कविता और गद्य का आदान-प्रदान हुआ। इस समय की कविताओं और गीतों में लोक संस्कृति, धार्मिक विचार, प्रेम, भक्ति, वीरता और दर्शन का उल्लेख था। अपभ्रंश का साहित्य सरल भाषा में होने के कारण इसे आम लोगों द्वारा समझना और सराहना आसान था। इस काल में अपभ्रंश में रचित जैन और बौद्ध साहित्य, जैसे कि "पउमचरिउ" (Paumachariu) और "महापुराण", ने भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक इतिहास में अपनी महत्वपूर्ण जगह बनाई।

क्षेत्रीय विविधता

अपभ्रंश की भाषाई संरचना में क्षेत्रीय विविधता भी देखने को मिलती है। इस समय विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित भाषाएँ और बोलियाँ एक दूसरे से भिन्न थीं, और अपभ्रंश ने इन क्षेत्रीय बोलियों को एक साझा भाषा में समाहित किया। उदाहरण के लिए, कन्नड़, तमिल, गुजराती, हिंदी, और मराठी भाषाओं ने अपभ्रंश के साथ मिश्रित होकर अपना विकास किया।

इस प्रकार, अपभ्रंश न केवल एक भाषाई संक्रमणकालीन प्रक्रिया थी, बल्कि यह भारतीय भाषाओं के विकास में एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ बन गया। इसकी सरल और जनसुलभ संरचना ने भारतीय समाज में संवाद की नई संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त किया और आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास में गहरी छाप छोड़ी।

अपभ्रंश काल की समाप्ति

अपभ्रंश की समाप्ति 13वीं शताब्दी में हुई। इसके बाद क्षेत्रीय भाषाएँ स्वतंत्र रूप से विकसित होने लगीं।

निष्कर्ष (Conclusion)

अपभ्रंश भारतीय भाषाओं के विकास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी है। यह भाषाएँ न केवल प्राकृत और संस्कृत के बीच का संक्रमणकालीन चरण हैं, बल्कि इनका योगदान भारतीय भाषाओं के ऐतिहासिक विकास में अत्यधिक प्रभावशाली रहा है। अपभ्रंश का उद्भव लगभग 6वीं शताब्दी के आसपास हुआ था और यह 13वीं शताब्दी तक प्रभावी रहा। इस दौरान अपभ्रंश ने न केवल भारतीय साहित्य और संस्कृति को समृद्ध किया, बल्कि भारतीय भाषाओं की संरचना और विकास में भी एक नया मोड़ प्रदान किया।

अपभ्रंश का सबसे बड़ा योगदान यह था कि इसने संस्कृत के कठोर और जटिल व्याकरण को सरल किया, जिससे यह भाषाएँ आम जनता द्वारा बोली और समझी जा सकीं। संस्कृत के उच्चारण और संरचनात्मक जटिलताओं को छोड़कर, अपभ्रंश ने स्थानीय बोलियों को अपने में समाहित किया और उन्हें अधिक सहज और सरल बना दिया। यही कारण था कि अपभ्रंश ने भारतीय समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया और जनता में लोकप्रिय हो गया।

इसके अतिरिक्त, अपभ्रंश ने भारतीय साहित्य को एक नई दिशा दी। जैन और बौद्ध साहित्य ने इस भाषा में रचनाएँ कीं, जिनसे न केवल धार्मिक, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण योगदान मिला। अपभ्रंश साहित्य ने उस समय की सामाजिक स्थिति, धर्म, दर्शन और जीवनशैली को उजागर किया। विशेष रूप से जैन ग्रंथों और बौद्ध ग्रंथों का योगदान अपभ्रंश में अनमोल रहा है, क्योंकि इन ग्रंथों ने न केवल धार्मिक विचारों को प्रसारित किया, बल्कि भारतीय साहित्य के संवर्धन में भी भूमिका निभाई। भाषाई दृष्टिकोण से, अपभ्रंश का प्रभाव आज की आधुनिक भारतीय भाषाओं पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। हिंदी, गुजराती, मराठी, बंगाली, और अन्य भारतीय भाषाओं में अपभ्रंश के शब्दों, ध्वनियों, और व्याकरणिक संरचनाओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। विशेष रूप से हिंदी में, अपभ्रंश के शब्दों ने न केवल आम बोलचाल की भाषा को प्रभावित किया, बल्कि साहित्यिक भाषा को भी गहराई और समृद्धि दी। इसी तरह, अन्य भारतीय भाषाओं ने भी अपभ्रंश से ध्वन्यात्मक और शब्दावलीगत तत्व ग्रहण किए हैं। अंततः यह कहा जा सकता है कि अपभ्रंश ने भारतीय भाषाओं के विकास की दिशा को निर्धारित किया और भारतीय समाज में एक ऐसी भाषा प्रणाली का निर्माण किया, जो आज की आधुनिक भारतीय भाषाओं की नींव बनी। यह न केवल एक भाषा परिवर्तन का रूप था, बल्कि एक सांस्कृतिक और साहित्यिक आंदोलन भी था। अपभ्रंश की उपस्थिति और उसका प्रभाव भारतीय भाषाई इतिहास में अनमोल रहेगा, और यह भारतीय भाषाओं की संरचना, साहित्य, और समाज के अध्ययन में हमेशा महत्वपूर्ण स्थान बनाए रखेगा।

REFERENCES

1. चटर्जी, सुनीति कुमार। **भारतीय भाषाओं का इतिहास**। नई दिल्ली: साहित्य अकादमी।

2. शर्मा, सीताराम। **अपभ्रंश साहित्य का इतिहास**। जयपुर: राजस्थान विश्वविद्यालय।

3. त्रिपाठी, रामधारी सिंह। **हिंदी भाषा और उसका विकास**। वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।

4. Masica, Colin P. **The Indo-Aryan Languages**। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

5. Bloch, Jules. **The Formation of the Marathi Language**। दिल्ली: मोटिलाल बनारसीदास।